2 मई 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 3 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मई (प्रथम), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दिगम्बर जैन महासमिति का अधिवेशन संपन्न

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ दि.जैन महासमिति (गुजरात अंचल) का अधिवेशन दिनाँक 17 अप्रैल 2011 को बड़े उत्साह और उमंग के वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री प्रफुल्लभाई पटेल (गृहराज्यमंत्री-गुजरात) ने जैन समाज का देश की प्रगति एवं भारतीय संस्कृति में योगदान की बात कही।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने समाज के सामने अपनी प्रभावशाली शैली में समाज उत्थान एवं संगठन पर प्रकाश डाला। साथ ही डॉ. वीरसागरजी शास्त्री (कुन्दकुन्द भारती, दिल्ली) ने भी संबोधन दिया।

दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विजयजी जैन लुहाड़िया ने राष्ट्र स्तर पर चल रही योजनाओं से अवगत कराया तथा गुजरात में उन्हें कार्यान्वित करने के लिए प्रेरित किया।

इस अधिवेशन में श्री अजितजी जैन बड़ौदरा, श्री सौभागमलजी कटारिया अहमदाबाद एवं दि.जैन महासमिति के अन्य अंचल के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम में उपस्थित रहकर अपना विशेष सहयोग दिया। अधिवेशन में पूरे गुजरात से 1000-1200 प्रतिनिधियों की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर 16-17 अप्रैल को वस्त्रापुर मंदिर में 2 व्याख्यानों एवं 18 अप्रैल को नवरंगपुरा मंदिर में डॉ. भारिल्ल के 1 व्याख्यान का लाभ भी मिला। दोनों जगह डॉ. भारिल्ल ने टोडरमल स्मारक में आयोजित होने वाले पंकल्याणक महोत्सव का आमंत्रण दिया, जिसमें समाज ने भरपूर सहयोग प्रदान किया। इस आयोजन में श्री अजितभाई मेहता नवरंगपुरा, श्री सेवंतीलालजी गांधी एवं श्री रमेशभाई शाह वस्त्रापुर का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। **- एम.के .जैन, अहमदाबाद**

पंचम आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमिनार संपन्न

फरीदाबाद-दिल्ली : यहाँ सोहना रोड़ स्थित ऑसम रिसोर्ट के विशाल सभागार में दिनाँक २३ व २४ अप्रैल को दिव्य ध्वनि प्रचार प्रसार (सर्वोदय) ट्रस्ट द्वारा आयोजित पंचम आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमिनार का आयोजन संपन्न हुआ।

इस सेमिनार में श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर एवं विदुषी स्वानुभूति जैन मुम्बई द्वारा सरल एवं प्रभावी ढंग से जैन दर्शन के गूढ सिद्धांतों जैसे क्रमबद्धपर्याय, कर्मबन्ध का सिद्धांत तथा वस्तु-स्वातंत्र्य आदि को बुद्धि एवं वाणी का विषय न बनाकर प्रयोगात्मक पद्धति द्वारा समझाया गया। जीवन को सुखमय बनाने की दिशा में इस अभूतपूर्व प्रयास को सभी सदस्यों ने हृदय से सराहा एवं स्वीकार किया।

संस्था की ट्रस्टी एवं विदुषी डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा 'उपयोग का प्रयोग' प्रोजेक्टर के माध्यम से सहजतापूर्वक समझाया गया। इस सेमिनार में 'धर्म परिभाषा नहीं प्रयोग है' नामक सूत्र वाक्य साक्षात् मूर्तरूप में दृष्टिगोचर हुआ।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री अजितप्रसादजी जैन राजपुर रोड़ दिल्ली ने एवं दीप प्रज्वलन श्री जगदीशप्रसादजी जैन व श्री अशोकजी जैन जल बोर्ड, दिल्ली ने किया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में युवा उत्साही कार्यकर्ता वैभव-स्वाति एवं अंकुर-वाणी जैन का सहयोग सराहनीय रहा। **- आदीश जैन, दिल्ली**

चतुर्थ बाल युवा धार्मिक शिविर संपन्न

एवरशाइननगर-मलाड (मुम्बई) : यहाँ श्री महावीर दि.जैन चैत्यालय ट्रस्ट द्वारा दिनाँक १९ से २४ मई तक चतुर्थ बाल युवा धार्मिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस शिविर में मुख्य विद्वान के रूप में जयपुर से पधारे पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा प्रतिदिन दोनों समय 'पंचभाव' विषय पर मार्मिक कक्षाएं प्रौढ शिविरार्थियों के लिए ली गयी। युवावर्ग के लिए 'आठ कर्म' विषय पर पण्डित सौरभ शास्त्री मुम्बई व 'छह सामान्य गुण' पर विदुषी अनुप्रेक्षा शास्त्री मुम्बई ने कक्षा ली। बालवर्ग एवं संस्कार संबंधी कक्षाएं पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री गोरेगांव व पण्डित राहुलजी शास्त्री अलवर द्वारा ली गयी। रात्रिकालीन प्रवचनों में पण्डित अश्विनभाई शहा मलाड, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई व पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर के समापन के अवसर पर रविवार को निकाली गयी शाकाहार रैली विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। प्रतिदिन प्रात: जिनेन्द्र पूजन एवं सायं भक्ति का तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। अन्तिम दिन परीक्षा लेकर सफल छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री आगरावालों के निर्देशन में श्रीमती पूजा भारिल्ल, श्रीमती सीताजी, कु.वन्दना जैन आदि साधर्मियों के सहयोग से संपन्न हुआ।

सम्पादकीय – 55

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ८६

पिछली गाथा में धर्मद्रव्य का स्वरूप समझाया गया है।

अब प्रस्तुत गाथा में अधर्मद्रव्य का स्वरूप कहते हैं। मूल गाथा इसप्रकार है –

जह हवदि धम्मदव्वं तह तं जाणेह दव्वमधमक्खं।
ठिदिकिरियाजुत्ताणं कारणभूदं तु पुढवीव।।८६।।

(हरिगीत)

धरम नामक द्रव्यवत ही अधर्म नामक द्रव्य है।
स्थिति क्रिया से युक्त को यह स्थितिकरण में निमित्त है।।८६।।

जिसप्रकार धर्मद्रव्य है, उसीप्रकार अधर्म द्रव्य भी जानो; परन्तु जो द्रव्य गमनपूर्वक ठहरते हुए जीवों व पुद्गलों को पृथ्वी की भाँति ठहरने में निमित्त होता है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव उक्त बात की पुष्टि करते हुए कहते हैं कि अधर्मास्तिकाय गमन पूर्वक स्वयं ठहरते हुए जीवों एवं पुद्गलों को ठहराता है; किन्तु यह प्रेरणा करके नहीं ठहराता, बल्कि यह तो मात्र उदासीन रूप से निमित्त बनता है।

कवि हीरानन्दजी अपनी काव्य की भाषा में कहते हैं कि –

(दोहा)

जैसा धरम द्रव्य लसै, तैसा जान अधर्म।
थितिकिरिया कारण भला पृथिवी वत् जिनधर्म।।३७८।।

(सवैया इकतीसा)

जैसा धर्म दर्व कहा अरस, अरूप गंध,
सवद फास बिना ही लोक अवगाही है।
सारा लोक व्यापी विस्तार लोकमानलसै,
असंख्यात परदेस एका निवाही है।
तैसा ही अधर्म द्रव्य सगरे विसेषण सौं,
थितिकिरिया वंतौं का कारण कहाही है।
पाँचों अस्तिकाय विषै एक अस्तिकाय कहे,
यथारूप जानै मिथ्या मोहिनी ढहाही है।।३७९।।
जैसा धर्मदर्व कहा तैसा ही अधर्म दर्व,
इतना विसेस पर नीकै निहारतैं।
गतिकिरियावंतौं को पानीवत् कारन है,
धर्म दर्व जथारूप वस्तुता विचारतैं।।
थितिकिरियावन्तों कौं पृथ्वीवत कारन है,
सोई तौ अधर्मद्रव्य थिति के संभारतै।
पृथ्वी आप थानरूप अश्वकौं रहावै नाहि,
उदासीन थिति–हेतु सम्यक् उजारतैं।।३८०।।

(दोहा)

ज्यौं ग्रीषम मैं पथिक कौ छाया शीतलठौर।
थिति कारण अधरम तथा, क्षिति कारक है और।।३८१।।

कवि हीरानन्दजी उक्त सवैया में कहते हैं कि जैसा धर्मद्रव्य को असंख्यात प्रदेशी अरस, अरूप, अगंध तथा शब्द और स्पर्श के बिना लोक प्रमाण कहा है, उसीप्रकार यह अधर्म द्रव्य उक्त सभी विशेषणों से संयुक्त है तथा जीव और पुद्गलों को स्थिति में निमित्त है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि पृथ्वी अपने स्वभाव से अपनी अवस्था में स्थिर है तथा अधर्म द्रव्य भी अपने स्वभाव से ही स्थिर है तथा यह स्वयं स्थिर रहते हुए जीव व पुद्गलों की स्थिरता में निमित्त कारण होता है; परन्तु यह अधर्म द्रव्य जीव पुद्गलों को जबरदस्ती से स्थिर नहीं कराता। यदि गतिपूर्वक स्थिति में जीव व पुद्गल अपनी तत्समय की योग्यता से स्थिति करें तो अधर्म द्रव्य उनकी स्थिति में अपनी स्वाभाविक उदासीन अवस्था रूप से निमित्त मात्र सहायक होता है।

यहाँ श्री जयसेनाचार्य अपनी संस्कृत टीका में कहते हैं कि 'मैं आत्मा शुद्धस्वरूपी हूँ' ऐसा भान होने पर स्वभाव में स्थिरता होती है। इस प्रमाण शुद्ध आत्मा में स्थिरता का निश्चय कारण वीतराग निर्विकल्प स्व संवेदन है। शुभराग या पुण्य उसमें कारण नहीं है।

जीव अपने पर्याय में होते हुए राग–द्वेष की अस्थिरता छोड़कर शुद्ध चिदानन्द स्वभाव में स्थिरता करता है। उसमें स्वसंवेदन निश्चय कारण है तथा उस समय हुए अरहंत सिद्ध का विकल्प निमित्त कारण कहलाता है।

धर्म–अधर्मद्रव्य से लोक–अलोक का विभाग पड़ता है। धर्म–अधर्म द्रव्यों को न मानें तो लोक–अलोक की सिद्धि नहीं होती।

लोक–अलोक को व धर्म–अधर्म द्रव्यों को न जानें तो ज्ञान मिथ्या ठहरता है।

जो व्यक्ति धर्म–अधर्म द्रव्य को नहीं मानते, उनके समाधान के लिए आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव अगली गाथा लिखते हैं। ●

आगामी कार्यक्रम...

चन्देरी में वेदी शिलान्यास

ऐतिहासिक नगरी चन्देरी में अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर वेदी जिनालय एवं प्रवेश द्वार का भव्य शिलान्यास समारोह दिनाँक 6 मई को आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, स.सि. सुधीरजी कटनी, श्री राजेन्द्रजी ठोलिया, श्री रमेशजी तिजारिया, श्री हरीशजी धानुका, डॉ. रमेशजी निवाई (नेत्र विशेषज्ञ), श्री मिलापचंदजी डंडिया (वरिष्ठ पत्रकार), श्री सुमेरचंदजी किशनगढ, श्री अनूपजी नजा ललितपुर, श्री प्रेमचंदजी गुरहा रायपुर एवं डॉ. सत्यप्रकाशजी जैन (महामंत्री–विद्वत्परिषद्) उपस्थित रहेंगे।

शिलान्यास विधि के कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर के निर्देशन में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी टीकमगढ एवं श्री सतीशजी जैन पिपरई द्वारा संपन्न होंगे।

पूज्य गुरुदेवश्री की जयन्ती के अवसर पर –

गुरुणां गुरु : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल, मुम्बई

(नोट : अमेरिका के मुमुक्षु भाइयों द्वारा गठित नवीन संस्था मोना (मुमुक्षु मण्डल ऑफ नोर्थ अमेरिका) द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री के १२२वें जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई द्वारा दिनाँक ७ मई २०११ को दिया जाने वाला व्याख्यान जैनपथप्रदर्शक के पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है - सह संपादक)

परमपूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का अवतार, इस पंचमकाल का आश्चर्य ही कहा जायेगा। यदि मैं कहूँ, कि इस जीवन में मुझे, यदि उनके दर्शन नहीं होते, तो मेरे मानस पटल पर, संत वृत्ति की परिकल्पना भी आकार न ले सकी होती।

कैसे होते हैं संत ? किसे कहते हैं संत वृत्ति ? यदि किसी को देखना है, समझना है, तो स्वामीजी के व्यक्तित्व में झांककर देखें।

ऊँची कदकाठी, गौर वर्ण, दैदीप्यमान मुखमण्डल, धवल वस्त्र और इस आवरण में विराजमान एक अनावृत खुला हुआ व्यक्तित्व, मात्र एक ग्रन्थि से आवरित, एक निर्ग्रंथ व्यक्तित्व जगत के प्रपंचों से अछूता, मायाचार विहीन, जोड़ तोड़ से परे, प्रबंधन से पृथक, एक बच्चे के समान निश्चल, कोमल, समुद्र के समान गुरुता–गंभीरता ऐसे एक विशाल आयामी व्यक्तित्व के धनी पूज्य गुरुदेवश्री सही मायनों में गुरुणाम् गुरु थे। पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति मैंने अनेकों कवितायें लिखीं हैं। एक पद प्रस्तुत है –

वे आये तो, इस जीवन को, एक दिशा दिखला गये।
यूँ लगता था, मानो अब हम सही मार्ग पर आ गये।।
रे अनादि से, विस्मृत आतम को, अब ना भूलेंगे।
अब निश्चय ही, एक दिवस हम, सिद्धशिला छू लेंगे।।

मेरा आज का विषय है – विगत ३० वर्षों में कुन्दकुन्द कहान के तत्त्वज्ञान का प्रचार एवं स्थायित्व, उसमें युवा फैडरेशन का योगदान और आगामी ३० वर्षों की कार्य योजना तथा उसकी चुनौतियाँ।

बात बहुत करनी है और समय बहुत कम है।

यह तो सारी बात पूज्य गुरुदेवश्री के महाप्रयाण के बाद की हुई

पूज्य गुरुदेवश्री के समय से प्रारम्भ किये बिना बात अधूरी ही रहेगी

पूज्य गुरुदेवश्री के पहले तत्त्वज्ञान की चर्चा दुर्लभ ही थी। यदि चर्चा चलती भी तो मात्र पढने–पढाने तक सीमित थी।

कोई इसलिये स्वाध्याय नहीं करता था कि उसे आत्मकल्याण करना है, मोक्ष जाना है; पर पूज्य गुरुदेवश्री ने उपदेश देने के लिये स्वाध्याय नहीं किया। उनका स्वाध्याय आत्मकल्याण के लिये था।

परिवर्तन के बाद भी उनके प्रवचन मात्र स्वान्त:सुखाय ही हुआ करते थे।

वे किसी को समझाने के लिये प्रवचन नहीं करते थे।

मात्र निज भावना के अर्थ ही स्वाध्याय किया करते थे।

जगत में दूसरा ऐसा वक्ता खोज पाना असम्भव है

ऐसा नहीं है कि वे तत्त्वप्रचार नहीं करना चाहते थे। एक सच्चे आत्मार्थी को तत्त्वप्रचार की तीव्र इच्छा न हो ह्न यह तो संभव ही नहीं है, वे तो स्वयं कहा करते थे कि यदि किसी कौवे को भोजन मिल जाये तो पहले वह कांव–कांव करके अपने साथियों को बुलाता है, फिर सबके साथ मिल बांटकर खाता है।

तुझे आत्मकल्याण का यह मार्ग मिला और तू औरों को इस मार्ग पर न लगाये तो तू कौवों से भी गया बीता साबित होगा।

पर वे तो आत्मार्थी थे, प्रचारक नहीं; तत्त्वप्रचार उन्हें बहुत अच्छा लगता था; वे तत्त्वप्रचार में संलग्न लोगों का सम्मान भी करते थे और प्रोत्साहित भी, पर वे कभी प्रचारक नहीं बने।

उनके साथ सब कुछ अद्भुत था – वे प्रचारक नहीं बने पर प्रचार बढता गया। वे कहीं नहीं गये पर लोग उनके पास आते गये, उनसे जुड़ते गये।

पर यह क्या ? यहाँ भी उनका विरोध प्रारंभ हो गया इक तरफा।

उनकी ओर से न तो आक्रमण था और ना ही प्रतिकार, पर विरोध बढता गया, उग्र होता गया; मात्र उनके विरोध के ही नाम पर अनेकों संस्थाएं फलने फूलने लगीं, अखबार चलने लगे, विद्वानों को काम मिल गया।

पूज्य गुरुदेवश्री स्वयं तो आत्मार्थी थे ही; उनके साथ जो लोग जुड़े, वे भी आत्मार्थी बनकर ही जुड़े; अनेकों वर्षों तक यही क्रम चलता रहा।

कालक्रम में वही कुछ स्वाध्यायी लोग अपने–अपने नगर में सामूहिक स्वाध्याय करने लगे और कुछ पर्युषण में प्रवचन के लिये जाने लगे।

ये लोग जो बातें करते थे, वे बातें किसी ने पहले कभी सुनी नहीं थीं, जब यह चर्चा थोड़ी बढने लगी तो जो लोग, धर्म और समाज की रक्षा का भार अपने सिर पर लेकर घूमते थे, वे विचलित होने लगे; उन्हें धर्म ही संकट में दिखाई पड़ने लगा। बस ! फिर क्या था, चारों ओर से विरोध होना प्रारम्भ हो गया और कालान्तर में, इस विरोध ने ऐसा उग्र रूप धारण कर लिया कि स्वाध्याय प्रेमी मुमुक्षु समाज को, जिनमंदिर में, सामूहिक तौर पर स्वाध्याय करना संभव ही नहीं रह गया। बस इसी पृष्ठभूमि में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन अस्तित्व में आया।

इससे कई वर्षों पूर्व पूज्य गुरुदेवश्री की प्रेरणा से, सेठ श्री पूरनचंदजी गोदिका ने जयपुर में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्थापना की और सन् १९६७ में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल इस ट्रस्ट से जुड़े।

तब उन्होंने आधुनिक भाषा शैली में बालकों को तत्त्वज्ञान की शिक्षा देने के लिये एक नया पाठ्यक्रम तैयार किया। इन पुस्तकों को पढाने के

लिये देशभर में ४५० वीतराग–विज्ञान पाठशालाएं स्थापित कीं।

इन पाठशालाओं के संचालन के लिये वीतराग विज्ञान पाठशाला समिति की स्थापना की; इनकी परीक्षा लेने के लिये वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की स्थापना की; जिसके माध्यम से देशभर में प्रतिवर्ष बीस हजार से अधिक विद्यार्थी धार्मिक परीक्षा देते हैं।

पाठशालाओं में व्यवस्थित, वैज्ञानिक और रोचक तरीके से इन किताबों को पढने के लिये योग्य प्रशिक्षित शिक्षक तैयार करने के लिये गर्मियों की छुट्टियों में प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला प्रारंभ की; जो ४२ सालों से आज तक चल रही है और जिसमें अब तक बारह हजार से अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

पूज्य गुरुदेवश्री ने जिनआगम के जिन मर्मों को उद्घाटित किया; वे बातें अज्ञान के कारण सामान्य जनता की समझ में नहीं आ पाती थी और उनसे भ्रांति पैदा होती थी, जो अंतत: उग्र विरोध का कारण बनती थी।

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल ने उन सभी विषयों को आगम के प्रमाण देकर सरल, रुचिपूर्ण और आधुनिक भाषा शैली में लिखकर प्रस्तुत किया। जो धर्म के दशलक्षण, क्रमबद्धपर्याय, जिनवरस्य नयचक्रम्, अनेकान्त एवं स्याद्वाद, निमित्त–उपादान आदि किताबों के रूप में हमारे सामने आयी।

पूज्य गुरुदेवश्री ने इन किताबों की दिल खोलकर प्रशंसा की। कालांतर में ये किताबें हिन्दी से, इंग्लिश, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तमिल आदि भाषाओं में भी अनुवादित होकर लाखों की संख्या में देश–विदेश के आत्मार्थियों तक पहुँची। अल्पसंख्यक समाज के किसी धार्मिक साहित्य का इतनी बड़ी संख्या में प्रचार–प्रसार आश्चर्यजनक और दुर्लभ ही है।

तत्त्वज्ञान और तत्त्वप्रचार, समाज में विवादों का और अशांति का कारण न बने, इसके लिये आवश्यक था कि सक्षम विद्वान उसे सही स्वरूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत करें। इसके लिये पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने सोनगढ में ही प्रवचनकार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया।

उन्होंने सभी विद्वानों के सामने तत्त्वप्रचार की रीति–नीति स्पष्ट की;

तत्त्व की बात को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रशिक्षण दिया।

देशभर के सभी प्रवचनकारों ने इसमें भाग लिया, और इसका लाभ यह हुआ कि गलतफहमी के कारण होने वाले विवाद खत्म हो गये।

यह पाया गया कि तत्त्वज्ञान के विरोध के पीछे एक दूसरे के प्रति अपरिचय के कारण पैदा होने वाली गलतफहमियों का भी बहुत बड़ा हाथ है।

इस कमी को दूर करने के लिये धर्मरत्न पण्डित बाबूभाई मेहता, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल और श्री नेमिचंदजी पाटनी ने, एक नीति के तहत, समाज के सभी वर्गों के साथ प्रभावशाली संपर्क स्थापित किया, जिसके फलस्वरूप विरोध की तीव्रता कम हुई और तत्त्वप्रचार को बल मिला।

इतने बड़े विशाल देश में कुन्दकुन्द कहान के तत्त्वज्ञान के प्रभावशाली प्रचार के लिये बड़ी संख्या में, पूर्ण शिक्षित, न्याय–व्याकरण को जानने वाले, सभी अनुयोगों के ज्ञाता, नयों के ज्ञान में निपुण, पूर्ण समर्पित विद्वानों की आवश्यकता थी।

यह काम अत्यंत कठिन भी था, पर इसके महत्व को देखते हुये डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने १९७७ में जयपुर में महाविद्यालय की स्थापना की।

इस महाविद्यालय से आज तक ५७१से अधिक शास्त्री विद्वान तैयार होकर देश और विदेश में फैल गये हैं और आज देशभर में स्थापित हुये, पूज्य गुरुदेवश्री के सभी धामों का संचालन उन्हीं के सबल हाथों में है

आज भी इस महाविद्यालय से प्रतिवर्ष लगभग ३०–४० विद्वान पूर्ण शिक्षा प्राप्त करके निकलते हैं

पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में और उनके बाद भी अनेकों वर्षों तक देशभर में सोनगढ के अलावा मात्र टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ही एक ऐसा धाम था, जिसने संपूर्ण मुमुक्षु समाज के सहयोग से अत्यंत प्रभावशाली ढंग से तत्त्वप्रचार को गति प्रदान की।

कालान्तर में समय की मांग को देखते हुये अन्य केन्द्रों की आवश्यकता भी महसूस की जाने लगी और अब उन केन्द्रों के संचालन के लिये योग्य विद्वानों की फौज भी उपलब्ध थी।

सो विगत कुछ ही वर्षों में अनेकों केन्द्रों की स्थापना हुई; जो सभी अत्यंत प्रभावशाली ढंग से कुन्दकुन्द कहान के इस तत्त्वज्ञान के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ने, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के निर्देशन में तत्त्वप्रचार की गतिविधियों के जमीनी संचालन में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया।

वहीं दूसरी ओर सफल रीति–नीति की रचना और क्रियान्वयन से इस तत्त्वज्ञान को समाज में आधिकारिक तौर पर स्थापित किया।

मुझे यह कहते हुये गौरव की अनुभूति होती है कि अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन पर पूज्य गुरुदेवश्री की असीम अनुकम्पा थी और मुझे पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में मलाड (मुम्बई) में फैडरेशन के अधिवेशन के संचालन का सौभाग्य मिला है।

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल और पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को युगों तक इस बात के लिये याद किया जायेगा कि सिद्धांतों से समझौता किये बिना, समाज में विद्यमान अनेकों परस्पर विपरीत धाराओं के बीच संपर्क और सामंजस्य स्थापित करके तत्त्वज्ञान और तत्त्वप्रेमियों के प्रति एक वात्सल्य का भाव पैदा कर दिया है। आज हर व्यक्ति आत्मा और परमात्मा के बारे में गहराई से अध्ययन करने को उत्सुक है।

दो और युगांतरकारी कार्य इस दौरान हुये ह्न एक तो मुम्बई में जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल की स्थापना और दूसरा डॉ. हुकमचंद भारिल्ल का धर्म प्रचार हेतु विदेश प्रवास।

मुम्बई में आयोजित एक शिविर के दौरान डॉ. भारिल्ल का प्रवचन सुनकर एक भाई श्री दिनेश मोदी अत्यंत प्रभावित हुये और उन्होंने डॉ. भारिल्ल के समक्ष प्रस्ताव रखा कि यदि आपका सहयोग मिले तो मैं एक संस्था की स्थापना करके यह अद्भुत बात आपके माध्यम से बिना किसी पंथ के भेदभाव के समस्त जैन समाज तक पहुँचाना चाहता हूँ।

न करना तो डॉ. भारिल्ल ने कभी सीखा ही नहीं, कोई भी छोटे से छोटा या बड़े से बड़ा व्यक्ति अगर उनके पास तत्त्वप्रचार का कोई भी प्रस्ताव लेकर आता है तो वे तुरंत सहयोग के लिये सहमत हो जाते हैं, वह

भी सामने वाले की सुविधा के अनुरूप।

यहाँ भी वे श्री दिनेश मोदी के साथ हो लिये, मुम्बई में जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल के अनेकों सर्कल्स की स्थापना हुई और डॉ. भारिल्ल प्रतिवर्ष श्वेताम्बर पर्यूषण में इस संस्था द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला में प्रवचन हेतु आने लगे और तबसे आज तक २८–२९ वर्षों में यह क्रम कभी भंग नहीं हुआ।

वे अकेले ही नहीं आये, अपने साथ सभी तत्कालीन महत्वपूर्ण आध्यात्मिक प्रवक्ताओं को भी इस संस्था से जोड़ा, ताकि सभी सर्कल्स में एक साथ रोज सुबह शाम व्याख्यानों का कार्यक्रम चल सके।

इसका लाभ यह हुआ कि यह वीतरागी तत्त्वज्ञान उन सभी जैन बन्धुओं तक भी आसानी से पहुँच गया, जिनके पास अन्यथा इसके पहुँचने की कोई संभावना ही नहीं थी।

इसीतरह एक अध्यात्मप्रेमी भाई श्री रमणीक भाई बदर ने डॉ. भारिल्ल के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि आप स्वीकृति दें तो मैं आपका यू.के. और यू.एस.ए. प्रवास का कार्यक्रम बनाना चाहता हूँ। डॉ. साहब की स्वीकृति मिलने पर उन्होंने यह कार्यक्रम बना डाला।

बस फिर क्या था, वह क्रम आज २८–२९ वर्षों से बदस्तूर जारी है।

कल तक जिस अमेरिका में किसी ने आत्मा का नाम भी नहीं सुना था; आज वहाँ अमेरिका के नगर–नगर में वीतरागी तत्त्वज्ञान की गहरी से गहरी चर्चा करने वाले और समझने वाले लोग मौजूद हैं।

आज अमेरिका में डॉ. भारिल्ल ''आत्मा'' के नाम से जाने जाते हैं, वे आते हैं तो लोग कहते हैं कि ''आत्मा'' आ गयी।

कुन्दकुन्द कहान की भगवान आत्मा की बात अमेरिका और अन्य देशों तक पहुँचाने का श्रेय यदि किसी एक व्यक्ति को दिया जा सकता है तो वह है डॉ. भारिल्ल। कई वर्षों तक वे अकेले ही जाते रहे, फिर अन्य लोग भी इस क्रम में शामिल हो गये, उनमें पण्डित श्री अभयकुमारजी, श्री दिनेशजी शहा, श्रीमती उज्ज्वला शहा एवं मैं स्वयं भी शामिल हूँ।

एक और मील का पत्थर – विभिन्न टी.वी. चैनलों पर प्रतिदिन डॉ. भारिल्ल के व्याख्यानों का प्रसारण।

आज १० से अधिक वर्षों से लगातार प्रतिदिन डॉ. भारिल्ल के व्याख्यान टेलिविजन पर आते हैं, कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि इस शक्तिशाली माध्यम से कुन्दकुन्द कहान की यह भगवान आत्मा की बात किन–किन लोगों तक पहुँचती है, उन लोगों तक जिनके कानों में यह बात पहुँचना अन्यथा कभी संभव ही नहीं था।

एक और महत्वपूर्ण बात तो रह ही गई – विश्वविद्यालयों के स्तर पर इस तत्त्वज्ञान का पठन–पाठन।

डॉ. भारिल्ल और उनके शिष्य वर्ग ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, आज डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित अनेकों किताबें अनेकों विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल है और वे नियमित तौर पर विश्वविद्यालयों में आयोजित सेमिनारों में अपने निबन्ध प्रस्तुत करते रहते हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द के पाँच परमागमों में से तीन पर अब तक डॉ. भारिल्ल द्वारा हजारों पृष्ठों में समाहित अनुशीलन प्रकाशित हो चुके हैं।

उन कुन्दकुन्द के वे गम्भीर व क्लिष्ट ग्रन्थ जिन पर व्याख्यान करने से बड़े–बड़े विद्वान भी बचते हैं और इस डर से कलम नहीं चलाना चाहते कि कहीं कोई गलती न हो जाये, डॉ. भारिल्ल ने निर्भीक होकर जनसामान्य की आधुनिक भाषा में उन ग्रन्थों की ऐसी विस्तृत व स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की है, जिसे आज तक कोई भी चुनौती नहीं दे सका।

इन सभी कामों में जो दो बातें कॉमन है। एक तो डॉ. भारिल्ल और दूसरी निरन्तरता। यदि तीसरी बात इसमें शामिल की जाये तो वह है user friendliness (उपभोक्ता के अनुकूल) बिना किसी शर्त के सभी के साथ सहयोगी व्यवहार।

उक्त सभी बातों ने विगत ३० वर्षों में कुन्दकुन्द कहान के इस दुर्लभ तत्त्वज्ञान को सारे विश्व में सभी वर्गों, जाति और धर्मों के लोगों के बीच पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है डॉ. भारिल्ल ने।

यह तो चर्चा थी विगत ३० वर्षों की और आगामी ३० वर्षों के लिये हमारा लक्ष्य है ह्न धुंआधार तत्त्वप्रचार।

सभी वर्जनाओं से रहित, भेदभाव से निरपेक्ष, किसी बाड़े में बंधकर नहीं, सभी बाड़ों को तोड़कर; क्योंकि यदि हम बाड़ों में ही कैद रहेंगे तो तत्त्व का प्रचार कैसे होगा, नये लोगों तक तत्त्व कैसे पहुंचेगा, तत्त्वरसिकों की संख्या कैसे बढेगी ?

हाँ एक बात निश्चित है कि प्रचार के लिये सिद्धांत से समझौता नहीं किया जा सकता; हम अपनी बात अपने ही तरीके से जन–जन तक पहुंचायेंगे, हम तत्त्वप्रचार के लिये सभी उपलब्ध साधनों का उपयोग करेंगे, हम अपनी बात कहेंगे, पर किसी से उलझेंगे नहीं; अपनी शक्ति का अपव्यय, आरोप–प्रत्यारोप में नहीं करेंगे। हम न तो किसी पर कोई आरोप लगायेंगे और न किसी आरोप का जवाब देंगे; हमारा प्रयास होगा कि यदि हमारे मुख से एक वचन भी निकले तो उसमें मात्र आत्महित की ही बात हो।

रही बात चुनौतियों की; सो चुनौतियाँ बहुत हैं, अन्दर से भी और बाहर से भी। बाहरी चुनौति तो स्वाभाविक ही है; ऐसी अद्भुत बात आज तक किसी ने सुनी ही कहाँ है, पहली बार सुनेगा तो चौंकेगा तो सही, हर नये विचार का विरोध तो होता ही है सो होगा ही, हम उसके लिये तैयार हैं।

रही बात अंतरंग चुनौतियों की, सो यह एक बड़ी विडम्बना है।

हम सब एक भगवान के भक्त, एक गुरु के चेले, किसी बात में एकमत क्यों नहीं हो पाते हैं ? एक व्यक्ति मशाल लेकर खड़ा होता है और चार लोग विरोध में खड़े हो जाते हैं।

पर यह सब तो चलता रहेगा; हम किसी से द्वेष नहीं रखेंगे और द्वेषमूलक किसी विरोध पर न तो ध्यान ही देंगे और न उसका जवाब।

इससे तो आदिनाथ नहीं बच सके, मरीचि उनके सामने खड़ा हो ही गया था न।

आज हमारे साथ हजारो समर्थ विद्वानों की फौज है, सभी विद्यमान साधन हमारे पास उपलब्ध हैं और सबसे उत्तम वीतरागी संतों की वाणी का मर्म हमारे पास है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि कुन्दकुन्द कहान का यह महान तत्त्वज्ञान अमर है, अमर रहेगा। ●

लोनावाला प्रतिष्ठा : नवयुग की शुरूआत

– बालचन्द पाटनी, कोलकाता

दिगम्बर–श्वेताम्बर मटी जैन बनो के ध्येय वाक्य पर चलनेवाला अध्यात्म स्टडी सर्कल जैन तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिए सक्रिय है। उनके द्वारा श्वेताम्बर पर्यूषण पर्व के अवसर पर प्रतिवर्ष व्याख्यान मालायें आयोजित की जाती है, जिसमें 99 प्रतिशत मुमुक्षु समाज के विद्वान ही जाकर तत्त्वज्ञान की गंभीर चर्चा करते हैं।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल भी गत 29 वर्षों से लगातार अध्यात्म स्टडी सर्कल में तथा विदेश में भी श्वेताम्बर भाईयों के बीच में जाते रहे हैं और पूज्य गुरुदेव श्री द्वारा प्रचारित तत्त्वज्ञान को ही चर्चा करते हैं जिसे वे सभी लोग अत्यन्त रुचिपूर्वक अहोभाव से सुनते हैं, समझते हैं, स्वीकार भी करते हैं। प्रारंभ में आदरणीय लालचन्द भाई मोदी, बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', पं. प्रकाशचन्दजी हितैषी आदि विद्वान भी अध्यात्म स्टडी सर्कल में जाते रहे हैं।

अध्यात्म स्टडी सर्कल के अध्यक्ष श्री दिनेशभाई मोदी द्वारा मुम्बई के निकट स्थित लोनावाला में एक सुन्दर कैम्पस बनाया है, जिसमें उन्होंने एक भव्य मंदिर भी बनवाया है। उनकी हार्दिक भावना थी कि वे दिगम्बर–श्वेताम्बर का सम्प्रदाय भेद छोड़कर एक ऐसी प्रतिमा बनाये जो सर्वमान्य हो, जिसके लिए उन्होंने प्रयत्न भी किए, परन्तु वे प्रयत्न सफल नहीं हुए।

अतः उन्होंने उस मंदिर में लगभग 20 फीट लम्बे प्लेटफार्म के एक ओर श्वेताम्बर प्रतिमा एवं दूसरी ओर दिगम्बर प्रतिमा की स्थापना कराई। यह एक अद्भुत एवं अविस्मरणीय कार्य हुआ है।

इस कार्य के पीछे दिनेशभाई मोदी अभिप्राय एक ऐसा प्लेटफार्म तैयार करने का था, जहाँ दिगम्बर–श्वेताम्बर दोनों में परस्पर संपर्क में रहे, परस्पर संवाद प्रारंभ हो, जिसके फलस्वरूप वे वीतरागी तत्त्वज्ञान को समझकर अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकें एवं आपस के मतभेद क्रमशः कमजोर होकर समाप्त हो सकें।

चूंकि दिनेश भाई का डॉ. साहब के साथ बहुत निकट का सम्पर्क है और जब उनने अभयजी के माध्यम से अपना यह विचार उन्हें प्रगट किया तो डॉ.भारिल्ल सहर्ष तैयार हो गये और टोडरमल स्मारक के निर्देशन में दिगम्बर प्रतिमा की प्रतिष्ठा और स्थापना कराई गई।

श्वेताम्बर समाज में उसी विचारधारा के बहुसंख्यक समुदाय द्वारा उन्हीं के प्रयत्न से दिगम्बर प्रतिमा विराजमान किया जाना, उसकी दिगम्बर आम्नाय से पूजन अर्चना होना क्या यह अकल्पनीय परिवर्तन का प्रतीक नहीं है तथा परस्पर मतभेद कम होने का संकेत नहीं है ?

इस कार्य हेतु श्री दिनेशभाई मोदी एवं डॉ. भारिल्लजी को हार्दिक साधुवाद देना चाहिए।

परन्तु कुछ लोग उनके इस कार्य के प्रति शंकित होकर कुछ प्रश्न कर रहे हैं। उनसे मेरा पहला प्रश्न है कि उनका यह विरोध वैचारिक है या व्यक्तिगत। यदि वैचारिक है तो इसमें नई बात क्या है? गुरुदेव ने भी समयसार हाथ लगने के बाद मुंहपट्टी छोड़ने में अनेक वर्ष लगा दिए तब उनके इस सोच का उनके ही अनुयायीजनों ने कट्टर विरोध किया था, जान से मारने तक की धमकी दी; परन्तु गुरुदेव अड़िग रहे।

डॉ. भारिल्ल का यह कदम भी उसी प्रकार एक नवयुग की शुरूआत हो सकती है। विचारों में मतभेद स्वाभाविक है, परन्तु उसके लिए इसप्रकार हल्के स्तर पर उतरकर आग्रही होना उचित नहीं।

यहाँ मैं डॉ. भारिल्ल से अनुरोध करूँगा कि वे अपने विचारों को सशक्त तरीके से आगे बढ़ायें।

दूसरा यदि यह विरोध व्यक्तिगत है क्योंकि कुछ लोग उन्हें पसंद नहीं करते, उन्हें उनके हर कार्य का विरोध ही करना है तो इस विरोध की डॉ. भारिल्ल को परवाह भी नहीं करनी चाहिए और ना ही कोई प्रतिक्रिया।

मैं डॉ. भारिल्ल का विरोध करने वाले हर मुमुक्षु भाई से कहना चाहता हूँ कि वे पहले इस बात पर विचार करें कि –

1. पूज्य गुरुदेवश्री डॉ. भारिल्ल का कितना बहुमान करते थे; उनके हर कार्यों की अनुमोदना करते थे, दूरदर्शिता की प्रशंसा करते थे और उनकी क्षमता पर सदैव विश्वास रखते थे। डॉ. भारिल्ल ने भी उस समय के अनेक गंभीर मसलों का सुन्दर सामंजस्यपूर्ण समाधान दिया जो सभी को सहर्ष स्वीकार हुआ। हमें भी दूरदृष्टि, भरोसा और धैर्य रखना चाहिए। डॉ. भारिल्ल ने तत्त्वप्रचार की जो नई–नई योजनायें बनाई उनमें तात्कालिक मतभेद के बावजूद कालान्तर में डॉ. भारिल्ल की नीति ही सफल सिद्ध होती दिखाई दे रही है।

2. गुरुदेव के जाने के बाद उनके मिशन को विश्वव्यापी बनाने में डॉ. भारिल्ल का क्या योगदान है?

3. जिसने अपने जीवन के 76 वर्ष इस मिशन को सींचने में फलने–फूलने में लगाये, क्या वे उसे खराब करने की स्वप्न में भी सोच सकते हैं? क्या हमें डॉ. भारिल्ल की नियत या योग्यता पर शंका है?

5. जिन लोगों ने डॉ. भारिल्ल के विरोध का झण्डा उठा रखा है, उनके कार्यों/योग्यताओं/नियत पर भी विचार करें।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि जो भी सच्चा मुमुक्षु है और मिशन के प्रति समर्पित है, वे डॉ. भारिल्ल के इस कार्य का अनुमोदन करेंगे, सहयोग देंगे, एवं उनके प्रत्येक कार्य में सहयोगी रहेंगे।

जैन अध्यात्म के संदर्भ में डॉ. भारिल्ल आज इस स्थिति में आ गये हैं कि उनका लिखा/कहा हर वाक्य जिनवाणी सम्मत माना जाता है। अतः हम सबको उनकी इस योग्यता का भरपूर लाभ लेना चाहिए। उनके अमूल्य समय को जिनवाणी के लेखन–पाठन प्रचार में ही लगने दें। उनके एक सैकेण्ड के समय को भी अनावश्यक विकल्पों में नेउलझने दें।

इन सब विवादों को सड़कों पर लाना ओछी बुद्धि का परिचायक है और मिल बैठकर सुलझाना समझदारी है।

हम सबसे आह्वान करते हैं कि सब मिलकर अपनी ऊर्जा सृजन में लगावें, विध्वंस में नहीं। इसी में सबका भला है। ●

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

73

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

बीसवाँ प्रवचन

मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अधिकार में समागत व्यवहाराभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि का प्रकरण चल रहा है। इसमें अबतक कुल-अपेक्षा, परीक्षा रहित आगमानुसारी और सांसारिक प्रयोजन से धर्म धारण करनेवालों की चर्चा हुई। धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहाराभासियों में भी सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान के संबंध में जिसप्रकार की भूलें पाई जाती हैं, उनकी भी चर्चा हो चुकी है। अब सम्यक्चारित्र संबंधी चर्चा आरंभ करते हैं।

ये व्यवहारभासी लोग सम्यक्चारित्र के लिए किसप्रकार का प्रयास करते हैं – यह स्पष्ट करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''बाह्यक्रिया पर तो इनकी दृष्टि है और परिणाम सुधरने-बिगड़ने का विचार नहीं है। और यदि परिणामों का भी विचार हो तो जैसे अपने परिणाम होते दिखायी दें, उन्हीं पर दृष्टि रहती है; परन्तु उन परिणामों की परम्परा का विचार करने पर अभिप्राय में जो वासना है, उसका विचार नहीं करते। और फल लगता है सो अभिप्राय में जो वासना है, उसका लगता है। इसका विशेष व्याख्यान आगे करेंगे। वहाँ स्वरूप भलीभांति भासित होगा।

ऐसी पहिचान के बिना बाह्य आचरण का ही उद्यम है।

वहाँ कितने ही जीव तो कुलक्रम से अथवा देखादेखी या क्रोध, मान, माया, लोभादिक के आचरण करते हैं; उनके तो धर्मबुद्धि ही नहीं है, सम्यक्चारित्र कहाँ से हो ? उन जीवों में कोई तो भोले हैं व कोई कषायी हैं; सो अज्ञानभाव व कषाय होने पर सम्यक्चारित्र नहीं होता।

तथा कितने ही जीव ऐसा मानते हैं कि जानने में क्या है, कुछ करेंगे तो फल लगेगा। ऐसा विचार कर व्रत-तप आदि क्रिया के ही उद्यमी रहते हैं और तत्त्वज्ञान का उपाय नहीं करते।

सो तत्त्वज्ञान के बिना महाव्रतादि का आचरण भी मिथ्याचारित्र ही नाम पाता है और तत्त्वज्ञान होने पर कुछ भी व्रतादिक नहीं है, तथापि असंयतसम्यग्दृष्टि नाम पाता है। इसलिए पहले तत्त्वज्ञान का उपाय करना, पश्चात् कषाय घटाने के लिए बाह्यसाधन करना।[१]''

उक्त कथन में क्रिया, परिणाम और अभिप्राय की चर्चा की गई है। उपवास में भोजनादि का त्याग किया है, उस समय रहनेवाले भाव परिणाम हैं और उपवास के संबंध में हमारी मान्यता अभिप्राय है।

व्यवहाराभासी उपवास करने पर बिना खाये-पिये जैसे-तैसे दिन-रात निकाल लेने में ही सफलता समझते हैं; **परिणाम बिगड़े या सुधरे – इस बात का ध्यान ही नहीं रखते। कदाचित् परिणामों का ही ध्यान रख लें; पर अभिप्राय में जो वासना है, उसका तो विचार ही नहीं करते।**

व्यवहाराभासी के अभिप्राय में रहनेवाली वासना के स्वरूप के संबंध में पण्डित टोडरमलजी विस्तार से चर्चा करना चाहते थे; पर ग्रंथ के अपूर्ण रह जाने से वह काम नहीं हो पाया।

शारीरिक क्रियाकाण्ड का तो कोई फल होता ही नहीं है, शुभाशुभ परिणामों से भी पुण्य-पाप बंधते हैं, उनकी भी कोई विशेष कीमत नहीं है। **मुक्ति और संसार का कारण तो सम्यक् और मिथ्या अभिप्राय (मान्यता) हैं।**

यदि यश, प्रतिष्ठा या पुण्यबंध के लोभ में उपवास किया गया हो तो यह चारित्र संबंधी अभिप्राय का दोष है और भोजन के त्यागरूप क्रिया और उपवास के शुभभावों से मुक्ति की प्राप्ति होगी – ऐसी मान्यतापूर्वक भोजनादि के त्यागरूप उपवास मान्यता संबंधी अभिप्राय का दोष है।

आज भी आपको ऐसे अनेक लोग कहीं भी मिल जायेंगे; जो कहते हैं कि कोरे जानने से क्या होता है, फल तो कुछ करेंगे तो मिलेगा। ज्ञान का निषेध और अज्ञान का पोषण करनेवाले ऐसे लोग स्वाध्याय को कोई कार्य ही नहीं मानते, जबकि जिनवाणी में स्वाध्याय को परमतप कहा है।

अपनी आत्मा को जानना सम्यग्ज्ञान है और निजात्मा को ही लगातार जानते रहना आत्मध्यान है। इसप्रकार ज्ञान (स्वाध्याय) और ध्यान क्रमश: १०वें व १२वें तप हैं।

उपवास नामक प्रथम तप छह माह तक भी करे तो भी केवलज्ञान की गारंटी नहीं; पर **आत्मध्यानरूप बारहवाँ तप अन्तर्मुहूर्त** (अड़तालीस मिनिट से भी कम) **तक करें तो केवलज्ञान होने की गारंटी है।**

यह कोई नकली उपवास की बात नहीं है; क्योंकि आदिनाथ भगवान ने छह माह तक उपवास किया और उस समय केवलज्ञान नहीं हुआ और भरत चक्रवर्ती ने अन्तर्मुहूर्त तक आत्मध्यान किया तो एक भी उपवास किये बिना उसीसमय केवलज्ञान हो गया।

परमार्थ से विचार करें तो आत्मा का एकमात्र कार्य तो ज्ञान (जानना) ही है; पर यह भोला जगत (व्यवहाराभासी) ज्ञान को काम ही नहीं मानता। **असली धर्म तो सम्यग्दर्शन पूर्वक किये गये ज्ञान-ध्यान ही हैं। इसलिए पण्डितजी तो सर्वप्रथम तत्त्वज्ञान करने की ही प्रेरणा देते हैं।**

आत्मज्ञान विमुख व्यवहाराभासी गृहीत मिथ्यादृष्टियों की प्रवृत्ति का वर्णन मोक्षमार्गप्रकाशक में विस्तार से किया है। उस सबकी चर्चा करना यहाँ संभव नहीं है। अत: जिज्ञासु पाठकों से उक्त प्रकरण का मूलत: स्वाध्याय करने की अपेक्षा है। **(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २३८

पंच परमेष्ठी विधान संपन्न

सुसनेर (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 11 से 15 अप्रैल तक पंच परमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा द्वारा 47 शक्तियों में से प्रथम 20 शक्तियों एवं ग्रन्थाधिराज समयसार की 181 व 201वीं गाथा पर प्रवचनों का लाभ मिला। **– केशरी सिंह पाण्डे, सुसनेर**

2 मई 2011, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

महावीर जयन्ती समारोह संपन्न

1. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल समारक भवन में महावीर जयन्ती के अवसर पर दिनाँक 16 अप्रैल को प्रात: ध्वजारोहण तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा हुआ। इसके पश्चात् प्रभात फेरी निकाली गई।

जिनेन्द्र भक्ति एवं नाच गान करते हुए जुलूस लालकोठी मंदिर पहुँचा, जहाँ ध्वजारोहण एवं कलशाभिषेक हुआ। इसके पश्चात् जुलूस पार्श्वनाथ चैत्यालय पहुँचा, जहाँ ध्वजारोहण व कलशाभिषेक के पश्चात् आयोजित सभा में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला। इसके पश्चात् जुलूस जयपुर शहर के मुख्य जुलूस में सम्मिलित हुआ।

इस अवसर पर शहर में निकलने वाली मुख्य शोभायात्रा में टोडरमल स्मारक के पंचकल्याणक एवं भगवान महावीर के गर्भ कल्याणक की सुन्दर झांकी फैडरेशन महानगर ने आयोजित की।

ज्ञातव्य है कि जौहरी बाजार स्थित तेरापंथी बड़ा मंदिर में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा भगवान महावीर के जीवन एवं सिद्धांत पर विशेष प्रवचन हुआ।

2. कोटा (राज.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन जिला कोटा द्वारा महावीर जयन्ती के पुनीत अवसर पर दिनाँक 16 अप्रैल को जिनेन्द्र पूजन, भक्ति आदि अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए।

इस अवसर पर प्रात: 6 बजे प्रभात फेरी निकाली गई, तत्पश्चात् ध्वजारोहण किया गया। रात्रि को स्वाध्याय भवन रामपुरा में विचार गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें अनेक विद्वानों ने 'भगवान महावीर का जीवन एवं दर्शन' विषय पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अपने विचार प्रगट किये।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री कुशलराजजी मेहता एवं मुख्य अतिथि श्री एन.के. जैन (चीफ इंजीनियर थर्मल) थे।

दिनाँक 17 अप्रैल को रात्रि में श्री सीमंधर जिनालय, इन्द्र विहार में आध्यात्मिक भजन एवं कविता-पाठ का आयोजन हुआ।

स्वाध्याय शिविर संपन्न

सुरेन्द्रनगर (गुज.) : यहाँ दिनाँक 21 से 25 अप्रैल 2011 तक स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर से पधारे पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा तीनों समय प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। प्रात: निश्चय-व्यवहार विषय पर एवं दोपहर व सायंकाल करणानुयोग की विशेष कक्षा एवं प्रवचन का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि **लींबड़ी** नामक ग्राम में भी आपके एक प्रवचन का लाभ मिला। **- निलेशभाई, सुरेन्द्रनगर**

हार्दिक बधाई !

चेन्नई निवासी श्री अरुण जैन द्वारा अपने सुपुत्र **आर्यन जैन** के दसवें जन्मदिवस (दिनाँक 21 अप्रैल) के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये की राशि प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

कार्यकारिणी पुनर्गठित

कोटा (राज.) : यहाँ दिनाँक 27 मार्च को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन की कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया। कार्यकारिणी निम्नानुसार है ह्न

अध्यक्ष-श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन राहुल ट्रांसपोर्ट, **मंत्री**-श्री चेतनजी जैन, **महामंत्री**-श्री सुरेन्द्रजी जैन रामपुरा, **उपाध्यक्ष**-श्री भानुजी पाटनी, श्री अंकुरजी जैन, श्री संजयजी जैन मवाहत, श्री अजयकुमारजी जैन सी.ए. व श्री विकासजी जैन विज्ञान नगर, **कोषाध्यक्ष**-श्री लक्ष्मीकांतजी जैन, **सह-कोषाध्यक्ष**-श्री विक्रांतजी जैन, **सांस्कृतिक मंत्री**-श्री निकलंकजी शास्त्री व श्री चेतनजी शास्त्री, **प्रचार मंत्री**-श्री यतीन्द्रजी जैन व श्री समकितजी जैन, **संगठन मंत्री**-श्री शैलेन्द्रजी चांदवाड़ व श्री वेदप्रकाशजी जैन, **संरक्षक**-श्री ज्ञानचंदजी जैन, श्री प्रेमचंदजी जैन बजाज व श्री विजयजी ए. जैन, **परामर्शदाता**-श्री विनोदजी सेठिया, श्री कमलजी बोहरा, श्री महेन्द्रजी अतुल शक्ति व श्री महेन्द्रजी भिण्डी वाले, **संभाग प्रभारी**-श्री अजेयजी जैन सी.ए., **प्रान्तीय उपाध्यक्ष**-श्री जयकुमारजी जैन एवं **जिला प्रभारी**-श्री तेजमलजी पटवारी चुने गये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

10 से 12 मई	मेरठ	वेदी प्रतिष्ठा
12 से 14 मई	दिल्ली	पंचकल्याणक दि.जैन परिषद
15 मई से 1 जून	जयपुर	प्रशिक्षण शिविर
3 जून से 24 जुलाई	विदेश	धर्मप्रचारार्थ (U.K.-U.S.A.)

नोट : विदेश का विस्तृत कार्यक्रम विगत अंक में दिया जा चुका है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 अप्रैल 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127